हिन्दू मुस्लिम मेल

हिन्दू मुसलमान एक ही देश के निवासी हैं इनके आर्थिक स्वार्थ एक से हैं दिन-रात का जीवन इस तरह मिला हुआ है कि अलग नहीं किया जा सकता। इतना होनेपर भी आज दोनों में इतना वैर क्यों मालूम होता है मानो साँप और नौले सरीखा उनमें जन्म से वैर है। और बहुत से लोग तो ऐसे हैं जो की एकता में विश्वास ही नहीं करते।

पर गौर से देखने से पता लगता है कि हिन्दू मुसलमान दोनों ही एक दूसरे से मिलते जा रहे थे। असहयोग के बाद राजनैतिक स्वार्थ के कारण अगर दोनों में जानबूझकर वैर पैदा न कराया गया होता तो इन १७-१८ वर्षों में दोनों बिल्कुल मिल गए होते। पर इससे जिनके स्वार्थ को धक्का लग रहा था उन्होंने लोगों के भीतर छिपे हुए शैतान को उभारा-दोनों की बर्बादी की ओर दोनों की कब्र पर अपना महल बनाना चाहा। वे आज अपनी कोशिश में सफल हुए मालूम होते हैं पर यह भूलना न चाहिये कि आसमान कितने ही घने बादलों में क्यों न ढँक जाये सूर्य का उदय रुक नहीं सकता। इसी तरह हिन्दू मुसलमानों का मेल हजार कोशिशों पर भी रुक नहीं सकता।

इस देश के लिये यह नया प्रसंग नहीं है । एक दिन आर्य अनार्यों का झगड़ा हिन्दू मुसलमानों से बढ़कर था । दोनों की वंशपरम्परा हिन्दू मुसलमानों की अपेक्षा अधिक जुदी थी फिर भी आज आर्य अनार्य साफ हो गये है -- दोनों को मिलकर एक कौम बन गई है, एक सभ्यता और एक धर्म बन गया है ।

अपनी अपनी विशेषता मे चिपके रहने से विशेषता और समानता सब नष्ट होजाती है । अहंकार सब को खा जाता है । आर्यों और नागों ने जब इस तत्व को समझा तब दोनों मे एकता हुई ।

आज भी वैसी ही परिस्थिति है । हिन्दू मुसलमान मिलकर एक नहीं हो सकते यह मान्यता बहुतों की है । पर अगर आर्य और नाग मिलकर एक होगये तो मै नहीं समझता कि हिन्दू मुसलमानों मे उनसे अधिक क्या अन्तर है । नागयज्ञ सरीखी क्रूरता तो हिन्दू और मुसलमान दोनों मे से कोई भी नहीं दिखासकता ।

हिन्दू मुसलमानों मे क्या क्या भेद कहा जाता है इसकी एक तालिका बनाकर उसपर विचार करने से उन भेदों की निस्सारता मालूम होजायगी ।

	हिन्दू	मुसलमान
१	मूर्त्तिपूजक	मूर्त्तिविरोधी
२	मांसत्यागी	मांसभक्षी
३	गोवधविरोधी	शूकरवध विरोधी
४	बहुदेववादी	एकईश्वरवादी
५	पुनर्जन्म मानते है	कयामत मानते है
६	पूजामे गाते है बाजा बजाते है---	नमाज मे शान्त रहते है

७	पूर्व तरफ प्रणाम करते हैं---	पश्चिम तरफ नमाज पढ़ते है
८	चोटी रखते है	दाढ़ी रखते हैं
९	हिन्दुस्थानी है	अरबी है
१०	लिपि देवनागरी है	लिपि फारसी है
११	भाषा हिन्दी है	भाषा उर्दू है ।
१२	धार्मिक उदारता अधिक	धार्मिक उदारता कम
१३	नारीअपहरण नही करते-	-करते है
१४	मुसलमानो को अछूत समझते है	किसी को अछूत नही समझते

१ मूर्त्तिपूजा

१ आर्यसमाजी ब्राह्मसमाजी स्थानकवासी आदि अनेक सम्प्रदाय हिन्दुओ मे भी ऐसे है जो मूर्त्तिपूजा के विरोधी है सिक्ख और तारणपंथी अर्ध मूर्तिपूजक है अर्थात् वे शास्त्र की पूजा मूर्त्ति सरीखी करते है और मुसलमान भी अर्ध मूर्तिपूजक है, वे ताजिया और कब्र पूजते है, काबा का पत्थर चूमते है, मसजिदो मे जूते पहिन कर जाने की मनाई करते है, यह सब भी एक तरह की मूर्तिपूजा है, ईट चूना पत्थर मे आदरभाव भी मूर्तिपूजा है इसलिये हिन्दू मुसलमान दोनो ही मूर्त्तिपूजक है। या असल मे न हिन्दू मूर्त्ति-पूजक है न मुसलमान मूर्तिपूजक है । मूर्त्ति या ईंट चूना पत्थर को ईश्वर या खुदा कोई नही मानता, सभी इन्हें खुदा या ईश्वर को याद करानेवाला निमित्त मानते है । किसी को मसजिद देखकर खुदा याद आता है किसी को मूर्त्ति देखकर खुदा याद आता है। सब

धर्मस्थान या प्रतीक खुदा को पढ़ने या समझने की किताबें है । रामजी की मूर्ति के सामने पूजा करनेवाला हिन्दू रामजी की नीतिमत्ता प्रजापालकता त्याग उदारता वीरता आदि गुणो का वर्णन करता है यह नही कहता कि हे भगवान, तुम सगमरमर के बने हो बड़े चिकने हो बडे बजनदार हो आदि । इसी प्रकार मक्का की तरफ मुँह करने नमाज पढनेवाला मुसलमान मक्का के पत्थरो का ध्यान नहीं करता, दोनो सिर्फ सहारा लेते है ध्यान तो खुदा या ईश्वर का करते है इसलिये दोनों मूर्तिपूजक नहीं है ।

हा, इस्लाम मे जो अमुक तरह की मूर्तिपूजा की मनाई की गई है उसका कारण यह है कि हजरत मुहम्मद साहिब के समय मे मूर्तियो के नाम पर दलबन्दी लड़ाई झगड़े बहुत हो गये थे । हरएक मूर्ति मानो ईश्वर हो और मनुष्यो के समान मानो ईश्वरो मे भी झगड़े होते हो । मूर्ति को आधार बनाकर ये सब बुराइयॉ फलफूल रही थी इसलिये मूर्तिया अलग कर दी गई । पर ईश्वर को याद करने के लिये जो सहारे थे वे नष्ट नही किये गये । मतलब यह कि बुराई मूर्ति मे नही है किन्तु उसे ईश्वर मानने मे, मूर्तियों के समान ईश्वर को जुदा जुदा कर लडाने में उनके निमित्त वैर विरोध बढ़ाने मे है । इस बात को हिन्दू भी मंजूर करेगा मुसलमान भी मंजूर करेगा । मूर्ति का सहारा लेना नास्तिकता नहीं है । यह तो रुचि योग्यता आदि का सवाल है । इसलिये मूर्ति अमूर्त्ति को लेकर सम्प्रदाय न बनाना चाहिये । हो सकता है कि मुझे मूर्त्ति के सहारे की जरूरत न हो और मेरे बच्चे को या पत्नी को हो अथवा मुझे उसकी जरूरत हो किन्तु मेरे बेटे को न हो इसलिये

मूर्त्ति अमूर्त्ति के सम्प्रदाय न बनना चाहिये । रुचि के अनुसार उपयोग करना ही उचित है ।

जब कि हिन्दू विना मूर्त्ति के सन्ध्या सामायिक प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रियाए करते है तब मूर्त्ति के बिना नमाज क्यो नहीं पढी जासकती और जब मुसलमान कब्र ताजिया काबा आदि का सहारा लेते है तब मूर्त्ति मे क्या झगड़ा है । यह तो कोई बात न हुई कि हजरत मुहम्मद साहिब की कब्र का विरोध किया जाय पर दूसरे फकीरो की कब्रों पर रेवडिया चढ़ाई जाय, अपनी अपने बाप की और राजा महाराजाओं की देशसेवकों की और अनेक सुन्द-रियो की तसबीरे घर मे लटकाई जाय किन्तु हजरत मुहम्मद साहिब की तसबीर का विरोध किया जाय । यह सब तो एक तरह से हजरत का अपमान कहलाया । हजरतने अगर अपना स्मारक बनाने की मनाई की थी तो यह तो उनकी नम्रता थी और यह विचार था कि लोग कहीं बुतपरस्त न बन जॉय। खैर, सीधी सी बात यह है कि यह सब रुचि और लियाकत का सवाल है । इसमे विरोध करने की या किसी बात पर जोर देने की जरूरत नहीं है । हिन्दू और मुसलमान दोनो को रुचि और लियाकत पर ध्यान देना चाहिये । इन्हे मजहबी भेद का कारण न बनाना चाहिये । व्यवहार मे तो हिन्दुओ मे भी मूर्त्तिपूजक है और उसके विरोधी भी है और मुसलमानो मे भी मूर्त्तिपूजक है और उसके विरोधी भी हैं ।

२ मांसभक्षण

१--हिन्दुओ मे सौ मे पचहत्तर हिन्दू मासभक्षी है । शूद्र कहलानेवाली अधिकाश जातियां मास खाती है बंगाल उड़ीसा मैथुल

आदि प्रान्तों मे उच्चजाति के कहलानेवाले ब्राह्मण आदि भी मांस खाते है। क्षत्रिय लोग अधिकतर मांस खाते है। सिक्ख मास खाते है ईसाई भी खाते है इसलिये मांसभक्षण हिन्दू मुसलमानो के भेद का कारण नही कहा जासकता। बहुत से बहुत इतना ही हो सकता है कि जो लोग मासभोजन से बहुत अधिक परहेज करते है वे मासभक्षियो के यहां भोजन न करे उनके साथ भोजन करने मे साधारणतः आपत्ति न होना चाहिये।

पर इस हालत मे हिन्दू मुसलमान का भेद न होगा मांस-भोजी शाकभोजी का भेद होगा।

हा, मासभोजन का विरोध हिन्दू और मुसलमान दोनों करते है। अहिंसा को दोनो महत्व देते है। यही कारण है कि हज करते समय हर एक मुसलमान को मांस का बिलकुल त्याग करना पडता है जू मारना भी मना है। साधारण दिनो मे अगर किसी प्राणी को मारना भी पड़े तो तड़पाना मना है। अगर हिंसा धर्म होता तो हज के दिनो मे अधिक से अधिक मास खाने का उपदेश होता, मासत्याग का नही। हिन्दुओ मे भी मासत्याग को बडा पुण्य माना हैं। इस-प्रकार मूल मे तो दोनो ही अहिंसावादी है आदत के कारण या कमजोरी के कारण जो हिंसा रह गई है वह दोनो तरफ है ऐसी हालत मे झगडने का क्या कारण है?

२ गोवध

गोवध हो या शूकरवध हो या और भी किसी प्राणी का वध हो, जब दोनो ही अहिंसा को महत्व देते है तब दोनो को वध का विरोधी होना चाहिये। गोवध और शूकरवध के विरोध पर जो

खास जोर दिया जाता है उसके कारण ढूंढने की अगर कोशिश की जाय तो दोनो एक दूसरे के मत का आदर करेगे। हिंदुस्थान कृषिप्रधान देश है। खेती की जरूरत हिंदुओ को भी है और मुसलमानो को भी है और खेती मे यहा गाय का जो महत्व है वह सबको मालूम है इसलिये गोवध का विरोध मुसलमानो को भी करना चाहिये।

शूकरवध देखने का दुर्भाग्य अगर किसी को मिला हो तो वह मासभक्षी ही क्यो न हो तो भी उसका दिल थर्रा जायगा। जिस तरह वह चीत्कार करता है - जिस तरह वह जिंदा जलाया जाता है इससे क्रूर से क्रूर आदमी की रूह कॉप जाती है। परिस्थिति अनुकूल न होने से यद्यपि इस्लाम पूरी तरह से पशुवध नही रोक पाया फिर भी इस तरह की क्रूरता का विरोध तो उसने किया ही। किसी भी जानवर को तड़पाने की अनुमति तो उसने कभी न दी, इस दृष्टिसे उसका शूकरवध विरोध बहुत ही उचित है। हिंदू तो अपने को मुसलमानो की अपेक्षा अधिक अहिंसावादी मानते है इसलिये उन्हे तो मुसलमानो की अपेक्षा भी अधिक शूकरवध-विरोधी होना चाहिये।

पर यह सवाल हिंसा अहिंसा की दृष्टि से विचारणीय नही रह गया है इसके भीतर अधिकार का अहकार घुस गया है। कसाईघर मे दिन-रात सैकड़ो गाये कटती है वे गाये भी प्रायः हिंदुओ के यहां से खरीदी जाती हैं, इस पर हिंदुओ को इतराज नही होता पर ईद के गोवध पर इतराज होता है। इसलिए यह

प्रश्न अधिकार का प्रश्न बन जाता है।

जहां अधिकार का सवाल आया वहां मुसलमानों को अपने अधिकार की रक्षा के लिये गोवध करना जरूरी हो जाता है इसलिये गोवध रोकने का सब से अच्छा तरीका यह है कि साधारण पशु वध के कानून के अनुसार मुसलमानों को कुर्बानी करने दी जाय। हां, आमरास्ते पर या खुली जगह मे पशुवध न करने का जो सरकारी कानून है वह धार्मिक भावना से एक हिन्दू के नाते नहीं, किन्तु एक साधारण नागरिक के नाते पालन कराना चाहिये। सीधी बात यह है कि गोवध के प्रश्न पर हिन्दुओं को पूरी उपेक्षा कर देना चाहिये। गोवध रोकने के लिये शूकरवध करना निरर्थक है क्योंकि इससे गोवध बढेगा और दोनो पक्षो मे होनेवाला मनुष्यवध और हृदयवध और भी कई गुणा होगा।

गोवध रोकने का वास्तविक उपाय यह है कि गोपालन इस तरह किया जाय कि किसी को गाय बेचने की ज़रूरत ही न पड़े। आज जो हजारो की संख्या में गोवध हो रहा है उसमे हिन्दुओं का हाथ कुछ कम नहीं है। तब वर्ष छः महीने में होनेवाला गोवध हिन्दू मुसलमानो के भाईचारे का वध क्यो करे?

४ बहुदेववाद

हिन्दू बहुदेववादी है पर अनेकेश्वरवादी नहीं हैं। मुसलमानों के समान वे भी एकेश्वरवादी हैं और हिन्दुओं के समान मुसलमान भी बहुदेववादी है। हिन्दू एक ही परमात्मा मानते है उसके अवतार अंश विभूतियाँ दूत आदि अनेक मानते हैं इस प्रकार नाना रूपों

से एक ही ईश्वर को पूजते हैं। मुसलमान एक ही खुदा के हजारों पैगम्बर मानते है और उनका सन्मान भी करते हैं। हजारो पैगम्बरों के होने पर भी जैसे खुदा एक है उसी प्रकार हजारों सेवकों भक्तों अवतारों के होने पर भी ईश्वर एक है।

फिर इस बातको लेकर हिन्दुओ हिन्दुओं में इतना मतभेद है जितना हिन्दू मुसलमानों में नहीं है। बहुत से हिन्दू ईश्वर ही नहीं मानते, मुसलमान ईश्वर तो मानते हैं। अगर अनीश्वरवादी हिन्दुओ से ईश्वरवादी हिन्दू प्रेम से मिलकर रह सकते है उनसे सामाजिक सम्बन्ध भी रख सकते है जैसे जैनियो और बौद्धों से रखते हैं, तो ईश्वर को न माननेवाले हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलकर एक क्यो नहीं हो सकते?

५ पुनर्जन्म

हिंदुओं का पुनर्जन्म और मुसलमानो की कयामत इसमे वास्तव मे कोई फर्क नहीं है। दोनों मान्यताओं का मतलब यह है कि मरने के बाद इस जन्म के पुण्य पाप का फल मिलेगा। अब वह फल मरने के बाद तुरन्त ही मिलना शुरू होजाय या कुछ समय बाद मिले इसमें धार्मिक दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। क्योकि दोनों से पाप से भय और पुण्य का आकर्षण पैदा होता है। इसलिये इस बात को लेकर भी दोनो मे कोई भेदभाव नहीं है।

६ बाजा

हिंदू पूजा मे बाजा बजाते हैं पर मुसलमान भी बाजे के विरोधी नहीं हैं। ताजियो के दिनो मे तो इतने बाजे बजाते हैं कि शहर भर की नींद हराम हो जाती है। और हिन्दू पूजा में बाजा

बजाने पर भी सन्ध्यावन्दन आदि के समय ऐसे चुप रहते हैं कि स्वास भी रोक लेते है। इससे इतना पता तो लगता है कि बाजे के विरोधी न हिन्दू हैं न मुसलमान, न मौन का विरोधी दोनों मे से कोई है। बात सिर्फ मौके की है।

इस देशमें बाजे का इतना अधिक रिवाज है कि उसे बीमारी तक कहा जा सकता है। कभी कभी मुझे व्याख्यान देते समय इसका बडा कडुआ अनुभव हुआ करता है। व्याख्यान खूब जमा है श्रोता तल्लीन है इतने मे पड़ौस के मन्दिर से घंटे की आवाज आई और ऐसी आई कि मेरी आवाज बेकाम होगई। पुजारियो को घंटे से कितना मजा आया सो तो माळूम नहीं पर सैकडों और कभी कभी हजारों श्रोताओं का मजा किरकिरा होगया यह तो सब ने अनुभव किया। कभी कभी सभा के पाससे विवाह आदि के जुलूस ही निकलकर मजा किरकिरा कर दिया करते है, इससे इतना तो लगता है कि बाजों को कुछ कम करना जरूरी है। पर इससे भी जरूरी यह है कि जो कुछ हो नागरिकता के आधार पर बनाये गये कानून के अनुसार हो या समझा बुझाकर हो। नागरिकता के आधार पर नियम कुछ निम्नलिखित ढग से बनाये जा सकते है।

क—रात के दस बजे के बाद सुबह पांच बजे तक बाजा बजाना बन्द रहे।

ख—मसजिद में जब नमाज पढी जाती हो तब आसपास बाजा बजाना बन्द रहे। पर इसकी सूचना किसी झंडे या निशान से दी जाय और समय नियत रहे।

ग–जहां पचीस या पचास आदमियों से अधिक की सभा भरी हो व्याख्यान हो रहा हो तो सूचना मिलते ही वहां बाजा बजाना बन्द रहे ।

घ–बाजा बजाने पर टेक्स लगाया जाय, आदि । इसप्रकार के नियम बनाये जाँय पर वे नागरिक अधिकारों की समानता से रक्षा करते हो मजहब के घमंड की रक्षा न करते हों ।

पर जब तक यह बाजा कानून न बने तब तक गोवध के समान इस प्रश्न पर भी पूरी उपेक्षा की जाय । जिसको बजाना हो बजाये न बजाना हो न बजाये । व्याख्यान होता हो, नमाज पढ़ी जाती हो किसी घर में गमी हुई हो तो इस बात की सूचना बाजे बजवानेवालों को करदी उन्हे जची तो ठीक, न जची तो न सही, अधिकार के बल पर या डरा धमकाकर या मारपीट कर बाजे रुकवाने का कोई मतलब नहीं । इससे तो प्राणो के ही बाजे बजजाते हैं । पूजा और नमाज सब नष्ट होजाते है ।

सच्चे धर्म की बात तो यह है कि अगर नमाज पढ़ी जाती हो और ठाकुरजी की सवारी गाजे बाजे के साथ निकले तो मसाजिद के सामने आते ही सवारी को रुक जाना चाहिये और सब लोक शान्ति से इस तरह खड़े रह जाँय मानो नमाज में शामिल होगये हों । नमाज खत्म होनेपर मुसलमान लोग सवारी को सन्मान से बिदा करे । अगर सवारी नमाज के पहिले ही आजाय तो सवारी को सन्मान से विदा देने पर मुसलमान लोग नमाज पढ़ें अगर इसके लिये दस पांच मिनट नमाज में देर हो जाय तो कोई हानि नहीं ।

हिन्दू और मुसलमान किसी तरह दो हो सकते है पर ईश्वर

और खुदा तो दो नही हो सकते तब खुदा के लिये ईश्वर का और ईश्वर के लिये खुदा का अपमान किया जाय तो क्या खुदा या ईश्वर किसी भी तरह खुश होगा।

यह सचाई अगर ध्यान मे आजाय तो नमाज और पूजा का झगड़ा ही मिट जाय।

लोग प्रतिदिन एक ही तरह से नमाज पढते है उन्हें कभी पूजा का भी तो मजा लेना चाहिये और जो सदा पूजा करते हैं उन्हे नमाज का भी मजा लेना चाहिये : खाने पीने में जब हमें नये नये स्वाद चाहिये तब क्या मन को नये नये स्वाद न चाहिये ? और उस हालत में तो ये कर्तव्य हो जाते है जब ये नये नये स्वाद प्रेम शान्ति और शक्ति के लिये बड़े मुफीद साबित होते है। पूजा नमाज प्रार्थना आदि सब का उपयोग हमारे जीवन के लिये हर-तरह मुफीद है।

७ पूर्व-पश्चिम

एक भाई ने पूछा कि आप हिंदू मुसलमानों मे क्या मेल करेंगे ? एक पूर्व को देखता है और एक पश्चिम को ? मैने कहा-- मिलते समय या बातचीत करते समय ऐसा होना जरूरी है। आप जिस तरफ को मुँह किये हैं उस तरफ को अगर मै भी करूँ तो आप मेरी पीठ देखेंगे, बात क्या करेंगे ? मैं अगर छाती से छाती लगाकर आप से मिलना चाहूँ तो जिस तरफ को आपका मुँह होगा उससे उल्टी दिशा में मेरा मुँह होगा अन्यथा मिल न सकेंगे। मिलने के लिये जब एक दूसरे से उल्टी दिशा में मुँह करना जरूरी है तब पूजा नमाज के मिलने मे उल्टी दिशा बाधक क्यों बने ?

समझ मे नहीं आता कि ऐसी छोटी छोटी बातें हमारे जीवन मे अड़गा क्यों डालती है। और मर्म की बात समझने की कोशिश क्यो नही की जाती । दिशा का झगड़ा एक तो निःसार है और निःसार न भी हो तो भी बेबुनियाद है। मुसलमन नमाज के लिये मक्का की तरफ मुँह करते हैं; हिंदुस्थान से मक्का पश्चिम मे है इसलिये पश्चिम में मुँह किया जाता है, योरुप में नमाज पूर्व में मुँह करके पढ़ी जाती है -- दक्षिण आफ्रिका में उत्तर तरफ और उत्तरीय देशो में दक्षिण तरफ। खुद मक्का में किब्ला के चारों तरफ चार इमाम नमाज पढ़ने बैठते है-- एक का मुँह पूर्व को, एक का मुँह पश्चिम को, एक का उत्तर को और एक का दक्षिण को, दिशा की बात ही नहीं है। और हिंदू तो जब सूर्य को नमस्कार करते है तब उनका मुँह पूर्व की तरफ होता है अन्यथा जिधर मूर्ति होती है उधर ही प्रणाम करते हैं, मूर्ति का मुँह पूर्व को हो तो पुजारी का मुँह पश्चिम को होगा जिससे मूर्ति से सामना हो सके।

साधारणतः हिन्दूदेवो का स्थान सब जगह माना जाता है। ईश्वर की शक्तियाँ नाना ढंग से नाना दिशाओं में है इसलिये हिंदू सब दिशाओ मे प्रणाम करता है। तीर्थों के विषय मे यह कहा जासकता है—

सेतुबन्ध जेरुसलम काशी मक्का या गिरनार।
सारनाथ सम्मेदशिखर में बहती तेरी धार॥
सिन्धु गिरि नगर नदी वन ग्राम।
कहूं क्या, कहां कहां है धाम।

किब्ला के विषय में यह कहा जासकता है—

क्या मसजिद मन्दिर गिरजाघर मक्का और मदीना।
खुदा जहा किब्ला है वो ही खुदा भरा तिलतिल मे।
है किब्ला तेरे दिल मे॥

अब बतलाइये झगड़ा किधर है?

८ दाढ़ी चोटी

हिन्दू मुस्लिम दंगो को 'दाढी चोटी संग्राम' कहा जाता है। जबकि दाढ़ी चोटी ये फैशन है इनका हिन्दू मुसलमानों से कोई ताल्लुक नहीं। सिक्ख दाढ़ी रखते हैं - हिन्दू सन्यासी दाढ़ी रखते हैं - राजस्थान के तथा अन्य प्रांतों के क्षत्रिय दाढ़ी रखते है और भी बहुत से हिन्दू दाढ़ी रखते है जबकि हजारों मुसलमान ऐसे है जो दाढ़ी नहीं रखते इसलिये दाढ़ी को लेकर हिन्दू मसलमानो में कोई भेद नहीं है।

रह गई चोटी की बात, सो चोटी का भी कोई नियम नहीं है। लाखो हिन्दू चोटी नहीं रखते और बहुत से मुसलमान किसी न किसी तरह चोटी रखते है--वे सिर पर चोटी नहीं रखते टोपी पर चोटी रखते है पर रखते हैं, इसलिये चोटी से भी हिन्दू मुसलमानो मे कोई भेद नहीं है।

असल बात यह है कि यह सब फैशन है। पुराने जमाने मे लोग स्त्रियों सरीखे लम्बे बाल रखते थे साफ सफाई की अड़चन से लोग गर्दन तक बाल रखने लगे। बादमे किनारे किनारे बाल कटाकर बीच मे बड़ा चोटला रखने लगे जैसे दक्षिण में अभी भी रिवाज है, वह चोटला कम होते होते चार वालों की चोटी रह गई,

और अन्तमे चोटी भी साफ होगई। जैसे लम्बी लम्बी मूछों से मक्खी सरीखी मूछें रहीं और अन्तमें साफ हो गईं यही बात चोटी की हुई। पश्चिम मे एक और फेशन था-लोग सिर तो घुटालेते थे पर एक तरहकी टोपी लगा लेते थे जिस पर बहुत सुन्दरता से सजाये हुए नकली बाल रहते थे। पुराने जमानेमें इंग्लेण्ड के लार्ड ऐसी टोपियों का उपयोग करते थे इस प्रकार सिर के बालो का फेशन टोपी के बालो का फेशन बन गया और इसीलिये सिर की चोटी तुर्कस्तान मे टोपी की चोटी बन गई। इसीलिये तुर्की टोपी लगानेवाले मुसलमान सिर पर चोटी न रखकर टोपीपर चोटी रखते हैं। हा, बहुत से हिन्दू और मुसलमान न सिर पर चोटी रखते हैं न टोपीपर चोटी रखते हैं। इस प्रकार हिन्दुत्व और मुसलमानियत, दोनो ही न चोटी से लटक रहे हैं न दाढ़ी में फँसे हैं इसलिये इस बात को लेकर झगड़ा व्यर्थ है।

९ देशभेद

कहा जाता है कि हिन्दू पहिले से यहा रहते है और मुसलमान अरबी है या पिछले हजार वर्ष मे बाहर से आये हैं। इस प्रकार दोनो के पूर्वज जुदे जुदे होने से दोनों मे स्थायी एकता नहीं हो पाती।

इसमे सन्देह नही कि मुट्ठी दो मुट्ठी मुसलमान बाहर से जरूर आये है पर आज जो हिन्दुस्थान मे आठ करोड़ मुसलमान हैं वे जाति से हिन्दू ही है, यद्यपि अब एक धर्म का नाम भी हिंदू हो गया है और सामाजिक क्षेत्र भी बट गया है इसलिये मुसलमान

अपने को हिन्दू न कहे -- हिन्दी, हिन्दुस्थानी या भारतीय आदि कहें पर इसमे शक नहीं कि हिन्दुओं की जाति और मुसलमानों की जाति जुदी नहीं है। जिन हिन्दुओं ने धर्मपरिवर्तन कर लिया वे ही मुसलमान कहलाने लगे --इससे जाति या वंशपरम्परा कैसे बदल गई ? आज मै अगर मुसलमान हो जाऊं तो कुछ रहन-सहन बदल लूंगा नाम भी बदल लूंगा पर क्या बाप भी बदल लूंगा ? अपने पुरखे भी बदल लूंगा ? बाप और पुरखे वे ही रहेगे जो मुसलमान होने के पहिले थे, तब जाति जुदी कैसे हो जायगी । इसलिये राम कृष्ण महावीर बुद्ध व्यास चन्द्रगुप्त अशोक विक्रम आदि जैसे हिन्दुओ के पुरखे है वैसे ही मुसलमानों के पुरखे है दोनो को उनका गौरव मानना चाहिये। इसप्रकार जातीय दृष्टिसे हिन्दू मुसलमान बिलकुल भाई भाई है धर्म जुदा है तो रहने दो। बुद्ध और अशोक का धर्म तो आज के हिन्दू भी नहीं मानते फिर भी उन्हे अपना प[ुर]ख समझते है। कई दृष्टियो से हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म मे जितना अन्तर है उतना हिन्दू धर्म और इसलाम मे नहीं।

यों तो कोई भी धर्म बुरा नहीं है, कौन सा धर्म अच्छा और कौनसा बुरा या कम अच्छा यह तुलना करना फजूल है. अपनी अपनी योग्यता परिस्थिति और रुचि के अनुसार सभी अच्छे हैं। हिन्दू अगर मुसलमान होगये तो इससे किसी की भी धर्महानि नहीं हुई, सत्य सब जगह था जिसको जहा से लेना था सो ले लिया इसमें किसी का क्या बिगड़ा । रुचि के अनुसार धर्म क्रिया करने से जाति या देश जुदे जुदे नही होजाते। इसलिये मुसलमान भी हिन्दुओ के समान हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्थानी हैं। उनका भी

इन देशपर उतना ही अधिकार है जितना हिन्दू कहलानेवालो का। दोनो ही एक माता की सन्तान है।

रह गई उन मुसलमानो की बात जो बाहर से आये हैं। ऐसे मुसलमान बहुत थोडे तो है ही, साथ ही उनमे भी शायद ही कोई ऐसा मुसलमान हो जिसका सम्बन्ध हिन्दू रक्त से न हो या इनेगिने ही होगे। सम्राट अकबर के बाद मुगल बादशाहो मे भी आध से ज्यादा हिन्दू रक्त पहुच गया था जो पीढी दर पीढ़ी बढता ही गया।

मनुष्य ने अपनी समाज-रचना से चाहे जो कुछ व्यवस्था बनाई हो लेकिन कुदरत ने तो चलते फिरते प्राणियो को मातृवशी ही बनाया है अर्थात् इनमे जातिभेद मादा के अनुसार बनता है नर के अनुसार नही। जमीन मे जैसे आप गेहूं चना आदि के भेद से जुदी जुदी जाति के झाड पैदाकर सकते है वैसे गाय भैस या नारी म नर के भेद से जुदी जुदी तरह के प्राणी पैदा नही कर सकते, वहा मादा की जाति ही सन्तान की जाति होगी।

ऐसी हालत मे हिन्दू माताओ से पैदा होनेवाले मुसलमान भी जाति से हिन्दू ही रहे, धर्म से भले ही वे मुसलमान कहलाते हों। इस प्रकार बाहर से आये हुए मुसलमान भी कुछ पीढ़ियो मे पूरी तरह हिन्दू जाति के बन गये है। इसलिये यह कहना कि मुसलमान बाहर के है और हिन्दू यहां के है बिलकुल गलत है। दोनो एक है - दोनो के पुरखे एक है - जाति एक है - देश एक है। इसलिये अरबी या हिन्दुस्थानी होनेसे हिन्दू मुसलिम मेलको अस्वाभाविक बतलाना ठीक नहीं।

१० लिपिभेद

कहा जाता है कि हिन्दुओं की लिपि देवनागरी है और मुसलमानो की फारसी, अब दोनो मे मेल कैसे हो ?

यह एक नकली झगड़ा है। इसलाम का मूल अगर अरब मे माना जाय तो अरबी को महत्ता मिलना चाहिये फारस तो इसलाम के लिये ऐसा ही है जैसा कि हिन्दुस्थान। फारस में हिन्दुस्थान की या हिन्दुस्थान मे फारस की लिपि को इतनी महत्ता क्यो मिलना चाहिये।

खैर, मिलने भी दो, पर न तो नागरी हिन्दुओ की लिपि है न फारसी मुसलमानो की। बगाल के हिन्दू नागरी पसन्द नहीं करते, मद्रास तरफ भी हिन्दू नागरी नहीं समझते खास तौर से जिनने सीखी है उनकी बात दूसरी है, उधर पंजाब तरफ के हिन्दू नागरी की अपेक्षा फारसी का उपयोग हा अच्छी तरह करते हैं और मध्यप्रान्त के मुसलमान फारसी लिपि नहीं समझते। इस प्रकार भारत मे अगर फारसी लिपि को स्थान मिला है तो वह प्रान्त के अनुसार मिला है न कि जाति के अनुसार। इसलिये इन्हे हिन्दू मुसलमानो के भेद का कारण बनाना भूल है।

अच्छी बात तो यह है कि सर्वगुणसम्पन्न कोई ऐसी लिपि हो जिसमें लिखने और पढ़ने मे गडबडी न हो छपाई का सुभीता हो सरल भी हो। देवनागरी मे भी इस दृष्टि से बहुत सी कमी है वह दूर करके या और किसी अच्छी लिपि का निर्माण करके उसे राष्ट्र लिपि मानलेना चाहिये।

पर जब तक लोगो के दिल अविश्वास से भरे हैं तब तक

के लिये यह उचित है कि नागरी और फारसी दोनों ही राष्ट्र लिपि-यॉ मानली जाँय । हरएक शिक्षित को इन दोनो लिपियो के पढ़ने का अभ्यास होना चाहिये और लिखना वही चाहिये जिसका पूरा अभ्यास हो । कुछ दिनो बाद जब जाति का घमड न रह जायगा तब जिसमे सुभीता होगा उसीको हिन्दू और मुसलमान दोनों अपनालेंगे ।

११ भाषाभेद

लिपि की अपेक्षा भाषा का सवाल और भी सरल है जब-र्दस्ती उसे जटिल बनाया जाता है । लिपि तो देखने में जरा अलग मालूम होती है और उसमे सरल कठिन का भेद नही किया जा सकता पर भाषा तो हिन्दी उर्दू एक ही है । दोनो का व्याकरण एक है क्रियाएं एक है अधिकाश शब्द एक है, कुछ दिनो से संस्कृत-वालो ने संस्कृत शब्द बढाने शुरु किये, अरबी फारसीवालो ने अरबी फारसी शब्द, बस एक भाषा के दो रूप होगये और इसपर हम लडने लगे । हम दया कहे कि मिहर, इसीपर हमारी मिहरबानी और दयालुता का दिवाला निकल गया , प्रेम और मुहब्बत मे ही प्रेम और मुहब्बत न रही ।

भाषा तो इसलिये है कि हम अपनी बात दूसरो को समझा सकें, बोलने की सफलता तभी है जब ज्यादा से ज्यादा आदमी हमारी बात समझे अगर हमारी भाषा इतनी कठिन है कि दूसरे उसे समझ नही पाते तो यह हमारे लिये शर्म और दुर्भाग्य की बात है । जब मै दिल्ली तरफ जाता हूं तब व्याख्यान देने में मुझे कुछ शर्म सी मालूम होने लगती है । क्योकि मध्यप्रान्त निवासी होने के

कारण और जिन्दगी भर संस्कृत पढ़ाने के कारण मेरी भाषा इतनी अच्छी अर्थात् सरल नहीं है कि वहां के मुसलमान पूरी तरह समझ सके। इसलिये मै कोशिश करता हूं कि मेरे बोलने में ज्यादा संस्कृत शब्द न आने पावे, इस काम मे जितना सफल होता हूं उतनी ही मुझे खुशी होती है और जितना नहीं हो पाता उतना ही अपने को अभागी और नालायक समझता हूं। मुझे यह समझमे नहीं आता कि लोग इस बात में क्या बहादुरी समझते है कि हमारी भाषा कम से कम आदमी समझे। ऐसा है तो पागल की तरह चिल्लाइये कोई न समझेगा, फिर समझते रहिये कि आप बड़े पंडित हैं।

हरएक बोलनेवाले को यह समझना चाहिये कि बोलने का मजा ज्यादा से ज्यादा आदमियो को समझाने मे है। पागल की तरह बेसमझ की बाते बकने मे नही।

हाँ, सुननेवालों को भी इतना खयाल रखना चाहिये कि हो सकता है कि बोलनेवाला सरल से सरल बोलने की कोशिश कर रहा हो पर जिन शब्दो को वह सरल समझ रहा हो वे अपने लिये कठिन हो उसका भाषा-ज्ञान ऐसा इकतरफा हो कि वह ठीक तरह से हिंदुस्थानी या सरल भाषा न बोल पाता हो तो उसकी इस बेबशी पर हमे दया करना चाहिये। बिना समझे घमण्डी या ऐसा ही कुछ न समझना चाहिये।

और बातों मे लड़ाई हो तो समझ मे आती है पर भाषा मे लड़ाई हो तो कैसे समझे? भाषा से ही तो हम समझ सकते है। इसलिये चाहे लड़ना हो चाहे मिलना हो पर भाषा तो ऐसी ही बोलना पड़ेगी जिससे हम एक दूसरे की गाली या तारीफ

समझ सके।

१२ धार्मिक उदारता

हिंदूधर्म और इस्लाम दोनो ही उदार है और इस विषयमें साधारण हिंदू समाज और मुसलमान समाज भी उदार है । पर मुश्किल यह है कि एक दूसरे को समझने की कोशिश नहीं करते । हिंदूधर्म मे तो साफ कहा है—

' यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वम् मत्तेजोंशसम्भवम् '

जितनी विभूतियॉ है वे सब ईश्वर के अंश से पैदा हुई है। इसलिये हिन्दू दृष्टि मे तो किसी भी धर्म के देव हो हिन्दू से वन्दनीय है। साधारण हिन्दू का व्यवहार भी ऐसा होता है। उस व्यवहार मे विवेकरूपी प्राण फूँकने की जरूरत अवश्य है पर उसमें उदारता अवश्य है। इस्लाम के अनुसार तो हर कौम और हर मुल्क में खुदा ने पैगम्बर भेजे है और उनका मानना हरएक मुसलमान का फर्ज है इसलिये साधारणतः मुसलमान किसी धर्म के महात्माओ का खण्डन नही करते, ऐसे मुसलमान कवियो की संख्या कम नही है जिनने श्रीकृष्ण आदि की स्तुति मे पन्ने भरे है। दुर्गा और भैरव तक के गीत गाने में मुसलमान कवि किसी से पीछे नहीं है पर दुख इस बात का है कि बहुत कम हिन्दुओ को इस बात का पता है। मुसलमानो मे धार्मिक उदारता कम नहीं है। हाँ, राजनैतिक चाल-बाजियो ने अवश्य ही कभी कभी अनुदारता का नंगा नाच कराया है पर साधारण मुसलमान उदार है। जरूरत है एक दूसरे के समझने की।

१३ नारी अपहरण

बहुत से लोगो की शिकायत है कि मुसलमान लोग हिन्दू नारियो का अपहरण करते है। अपहरण से यहाँ फुसलाना आदि भी समझ लिया जाता है। पर इस विषय मे हिंदू मुसलमानो में उन्नीस बीस का ही अन्तर है। ऊँची श्रेणी के मुसलमान और ऊँची श्रेणी के हिन्दू दोनों ही नारी-अपहरण नहीं करते। बाकी हिन्दू और मुसलमानो मे अपहरण होता है। जिन लोगो में तलाक का रिवाज है और आर्थिक स्थिति अच्छी नही है उन लोगो में इस तरह अपहरण होते हैं। हां, यह बात अवश्य है कि मुसलमान लोग मुसलमान और हिन्दू कहीं से भी अपहरण करते हैं जबकि हिन्दू हिन्दुओ में से ही खासकर अपनी जाति मे से ही अपहरण करते है। इसका कारण हिन्दुओं का जातीय संकोच है– अपहरण-वृत्ति का अभाव नहीं। इसका इलाज मुसलमानो को कोसना नहीं है किंतु अपनी क्षुद्र जातीयता का त्याग करना है।

हिन्दुओं मे बहुत-सी जातियां ऐसी है जिनमे विधवाओ को दूसरा विवाह करने की मनाई है – ऐसी विधवाएं जब ब्रह्मचर्य से नहीं रह पातीं तब वे भ्रष्ट हो जाती है उस समय प्रायः हिन्दू जातियो मे उसे स्थान नहीं मिलता तब वे राजी खुशी से मुसलमान होना पसन्द कर लेतीं है। हिन्दू लोग अगर क्षुद्र जातीयता का त्याग कर दें और विधवा-विवाह का विरोध दूर कर दें तो नारी अपहरण की घटनाएं न हो सकें।

फिर भी अगर कभी ऐसी घटना हुई हो जहां किसी नारी के साथ अत्याचार हुआ हो तो वहां सामान्य नारी रक्षण की दृष्टि

से प्रयत्न करना चाहिये। नारी अपहरण का दोष किसी जाति के मत्थे न मढ़ना चाहिये। साधारणतः यही कहना चाहिये कि उस गुंडे ने या उन गुडोंने ऐसा काम किया है।

जब तक हिन्दू मुसलमानो के दिल साफ नहीं हैं तभी तक यह झगड़ा है और बात बात मे एक दूसरे पर शंका होने लगती है। इसका फल यह होता है कि जब अत्याचार गौण और जातीय द्वेष मुख्य बन जाता है तब ऐसे लोग भी साथ देने लगते हैं जो अत्याचार से घृणा करते हैं किन्तु जातीय अपमान सहन नहीं कर सकते। इससे समस्या और उलझ जाती है। इसलिये ऐसी घटनाओं को जातीय रग में न रँगना चाहिये। सार बात यह है कि जब दोनों के मन का मैल धुल जायगा और हिन्दू लोग अपनी जातीय सकुचितता और पुनर्विवाहविरोध दूर कर देंगे तो नारी-अपहरण की समस्या बिलकुल हल हो जायगी। एक दूसरे के साथ घृणा प्रगट करने से वह समस्या हल नहीं होसकती।

१४ छूत अछूत

मुसलमानों की यह शिकायत है कि हिन्दू उन्हे अछूत समझते है। इसमें सन्देश नही कि हिन्दुओं मे छूत-अछूत की बीमारी है पर इसका उपयोग वे मुसलमानो के साथ कुछ विशेषरूप में करते है यह बात नहीं है। हिन्दू भंगी चमार बसोर महार आदि हिन्दुओं को जितना अछूत समझते है उतना मुसलमानों को नहीं। बल्कि मुसलमानो को अछूत समझते ही नहीं। हां, उनके साथ नही खाते पीते, सो तो वे एकधर्म एक वर्ण के लोगो के साथ भी नहीं खाते पीते। इस विषय मे मुसलमानो के साथ खास घृणा नहीं की जाती।

हिन्दुओ की दृष्टि मे तो हिन्दुओ की हजारो जातियो के समान मुसलमान भी एक जाति है।

छूत अछूत के प्रश्न मे हिन्दू मुसलमानो को मिलाने की इतनी जरूरत नहीं है जितनी हिन्दू हिन्दू को मिलाने की। इस बात को लेकर हिन्दू मुसलिम द्वेष के लिये कोई स्थान नही है।

इस प्रकार और भी बहुत सी छोटी छोटी बाते मिलेगी पर ऐसी सैकडो बाते तो एक मा बाप से पैदा हुए दो भाइयों मे भी पाई जातीं है पर इससे क्या वे भाई भाई नही रहते ? हिन्दू मुसलमान भी इसी तरह भाई भाई है।

नासमझी से या स्वार्थी लोगो के बहकाने से एक दूसरे पर अविश्वास पैदा हो रहा है और दोनो ऐसा समझ रहे है मानो एक दूसरे को खाजायगे। इसी झूठे भय से कभी कभी एक दूसरे का सिर फोड देते हैं। पर क्या हजार पाचसौ हिन्दुओ के मरने से या हजार पाचसौ मुसलमानो के मरने से हिन्दू या मुसलमान नष्ट होजॉयगे ?

सन् १९१८ मे इन्फ्लुएजामे एक करोडसे भी अधिक आदमी मर गये थे फिर भी जब बाद मे मर्दुमशुमारी हुई तो पहिले से साठ लाख आदमी ज्यादा थे। उस इन्फ्लुएजा से ज्यादा तो हम एक दूसरे को नहीं मार सकते फिर कैसे एक दूसरे को नष्ट कर देगे।

हिन्दू सोचे कि हम मुसलमानो को मार भगायेंगे तो यह असम्भव है। जिस दिन मुट्ठी भर मुसलमान हिन्दुस्थानमे आये उस दिन हिन्दू स्वतंत्र शासक होकर भी नही भगा सके या नष्टकर सके अब आज खुद गुलाम होकर आठ करोड़ मुसलमानो को क्या

भगायेंगे ? यदि मुसलमान सोचें कि हम हिन्दुओं को नेस्तनाबूद कर देंगे तो जिन दिनों उनके हाथ मे हिन्दुस्थान की बादशाहत थी उन दिनों हिन्दुओं को नेस्तनाबूद न कर सके तो आज खुद गुलाम होकर वे क्या हिन्दुओं को नेस्तनाबूद करेंगे ।

दोनो मे से एक भी किसी दूसरे को नेस्तनाबूद नहीं कर सकता । हाँ, दोनों लड़कर आदमियत को नेस्तनाबूद कर सकते हैं शैतान बनकर इस गुलजार चमन को दोजख बना सकते है ।

पाकिस्तान

कुछ लोग हिन्दू मुसलमानो के झगड़ो को निपटाने के लिये पाकिस्तान की योजना सामने लाने लगे हैं । अगर पाकिस्तान से भलाई होती हो तो किसी को भी उसके बनाने मे इतराज नहीं है । पर हिन्दू मुसलमान इस तरह देश भर मे फैले हुए है कि उनकी वस्ती अलग अलग करना असंभव है । पाकिस्तान मे भी हिन्दुओं का रहना होगा और हिन्दुस्तान मे भी मुसलमानो को । दोनों के स्वार्थ जैसे आज एक हैं वैसे कल भी एक रहेंगे । पर शायद उस दिन हिन्दू समझेंगे कि अब हम स्वतंत्र है मुसलमान समझेंगे कि हम स्वतंत्र हैं जब कि वास्तव में दोनो के दोनो गुलाम रहेंगे । कदाचित् घमंड में आकर अल्पमत कौम को दबाना चाहे तो दूसरी जगहके लोग उसका बदला लेंगे इस प्रकार वैर वैर को बढ़ाता जायगा न पाकिस्तानवाले खुशहाल होंगे न हिन्दुस्थानवाले । अपने पाप से फूट से अन्याय से गुलाम रहेंगे बर्बाद होंगे ।

अन्त में वहां भी मिलकर दोनों को एक बनना होगा इसके सिवाय कोई रास्ता नहीं है तो उसके लिये अभी और यहीं प्रयत्न

क्यों न किया जाय। एक ही नस्लके और एक ही देश के रहने वाले भाई सदा के लिये बिछुड़कर वैर मोल क्यों लें ?

चुनाव

दोनों भाइयों के अविश्वास का एक परिणाम यह है कि कौंसिलों आदि में जुदा जुदा चुनाव किया जाता है। सरकार की यह नीति किसी तरह समझमे नही आती। इससे दोनों और भी अधिक बिछुड़े है और स्वरक्षामें भी कुछ लाभ नही हुआ है। अगर कहीं हमारी संख्या दस फीसदी है और हमने लड़ झगड़कर पन्द्रह सीटें ले ली और उनको हमने ही चुना, मेम्बरों को दूसरे लोगों से कुछ मतलब ही न रहा तो इसका फल यह होगा कि जैसे हमारे पन्द्रह मेंबर दूसरों से कोई ताल्लुक नहीं रखते उसी प्रकार दूसरे पचासी मेम्बर भी हमसे कोई ताल्लुक नही रक्खेगे। दस के पन्द्रह मेम्बर लेलेने पर भी हमारा बहुमत तो हुआ नहीं और जो बहुमत के मेम्बर आये उनसे हमारी जान पहिचान भी एक वोटर के नाते नही हुई। ऐसी हालत में वे मनमानी करना चाहें तो हमारे दस के बदले पन्द्रह मेम्बर क्या करलेंगे। इसकी अपेक्षा यही अच्छा है कि हम जनसंख्या के अनुसार ही अपने मेम्बर चाहें और सम्मिलित चुनाव करें। दूसरे मेम्बरों के चुनाव में हमारा हाथ हो और हमारे मेम्बरों के चुनाव में दूसरों का हाथ हो। इसका परिणाम यह होगा कि हरएक मेम्बर को दोनों जाति के वोटरों से काम पड़ेगा इसलिये धारासभाओं मे कट्टर मुसलमान और कट्टर हिन्दू न पहुँचकर उदार मुसलमान और उदार हिन्दू पहुँचेंगे।

अल्पमत बहुमत तो जहां जिनका है वहां उन्हीं का रहेगा, पर एक दूसरे की पर्वाह न करनेवाले और फूट फैलने में ही अपनी इज्जत समझनेवाले मेम्बर न रहेंगे । इसी में हिन्दू मुसलमान दोनो की भलाई है ।

उपसंहार

अन्त में हिंदू और मुसलमान दोनों से मेरी प्रार्थना है कि वे अब अलग अलग होने की कोशिश न करें । एक दूसरे के उत्सवों में, त्यौहारों मे, धर्मक्रियाओं में मिलने की कोशिश करें । दोनों मिलकर मंदिरों का - दोनों मिलकर मस्जिदों का उपयोग करें, अपने को एक ही नस्ल का समझें । अन्त में दोनों मिलकर इस तरह एक हो जाँय कि बडा से बड़ा शैतान भी दोनों को न लड़ा सके ।

हिन्दूमुस्लिममेल हुए बिना कोई भी चैन से नहीं रह सकता इसलिये वह कभी न कभी होकर ही रहेगा । पर हम जितनी देर लगायेंगे उतने दिनों तक दोजख के दुःख भोगते रहेंगे, इसलिये जल्दी से जल्दी हमें मेल की कोशिश करना चाहिये और मेल करने का एक भी मौका न छोड़ना चाहिये ।

इतना अवश्य करें

१– अगर आप मनुष्य मात्र को एक जाति मानते हों, सब धर्मों में समभाव रखकर सबसे उचित लाभ उठाना चाहते हो, सामाजिक जीवन में जरूरी परिवर्तन करना चाहते हों और इसके लिये एक संगठन की जरूरत समझते हों तो सत्यसमाज के सदस्य अवश्य बनिये और सत्यसमाज के प्रचार में तनमनधन से सहायता कीजिये।

२– अपने गांव में सत्यसमाज का एक धर्मालय अवश्य बनाइये जो मनुष्यमात्र को दर्शन करने के लिये खुला रहता है जिसमें म. सत्य, म. अहिंसा और राम कृष्ण महावीर बुद्ध जरथुस्त ईसा आदि महात्माओं की मूर्तियाँ और कुरानशरीफ की पुस्तक या मक्काशरीफ की आकृति विराजमान रहती है।

ऐसा धर्मालय वर्धा स्टेशन के पास बोरगांव की हद में सड़क के किनारे सत्याश्रम में बना है आकर दर्शन कीजिये।

३–सप्ताह में एकदिन ऐसा अवश्य रखिये जब हिन्दू मुसल्मान आदि सब मिलकर सब धर्मों और जातियोंमें मेल बढ़ानेवाली प्रार्थनाएँ, स्वाध्याय, चर्चा या व्याख्यानादि कर सकें।

४–दूसरे धर्मवालों के धार्मिक उत्सवों में आदर के साथ शामिल होने कोशिश कीजिये।

—दरबारीलाल सत्यभक्त